आओ हम निर्माण करें

बक्त सिंह

आओ हम निर्माण करे!!

नहेमिय्याह २:१७ ब

बक्त सिंह

प्रथम संस्करण	:	मई १९७५
द्वितीय संस्करण	:	अक्तूबर १९८१
तृतीय संस्करण	:	फरवरी १९९४
चतुर्थ संस्करण	:	दिसम्बर २००७
पंचम संस्करण	:	अप्रैल २००८

प्रतिलिपियां यहां से प्राप्त की जा सकती हैं :-

हेब्रोन

गोलकुन्डा क्रॉस रोड,

हैदराबाद – ५०० ०२०

भारत

कर्बक आर्ट प्रिंटर्स द्वारा प्रकाशित, विद्यानगर, हैदराबाद – ४४

विषय सूचि

अध्याय १ **आपके हाथों को समर्थ करना** ५

अ) अगुवें की तैयारी

ब) भरोसा करना एंव आज्ञा पालन करना

स) प्रार्थना का जीवन

अध्याय २ **साथ साथ प्रयत्न (संघर्ष) करना** ८

अ) परिस्थितियों का सर्वेक्षण करना

ब) परिस्थितियों का सामना करना

स) परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करना

१) प्रभु में सामर्थ लेना

२) कार्य करने की इच्छा

३) कार्य बांटने का आनन्द

४) शत्रुओं को दूर रखने हेतु प्रार्थना करना

५) कूड़ा – करकट हटाना

अध्याय ३ **परमेश्वर कार्य में सफलता देगा** २३

अ) गरीबी फिर भी सम्पन्नता

ब) परीक्षाएं फिर भी विजयी

स) प्रार्थना, शक्तिशाली हथियार

समापन

परिचय

इस्त्राएल की सन्तान ने बाबुल देश में सत्तर वर्ष की बन्धुवाई में बिताये और राजा क्षयर्स के राज्य के दौरान यरुशलेम वापस लौटे (२इतिहास ३६:२२, २३; एज्रा १:१ – ११) जब वे लौटे तो उन्होंने यरुशलेम की शहरपनाह और द्वारों को टूटा-फूटा पाया और वे जल गये थे तथा दीवारें टूट गई थी। यरुशलेम की इस दशा का हाल कुछ व्यक्तियों द्वारा नहेम्याह के पास पहुंचा (नहेम्याह १:२ – ३) जब उसने यरुशलेम की हालत और परमेश्वर के लोगों के विषय सुना, तो वह उपवास और आंगुओं से प्रार्थना करने लगा। उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का स्मरण दिलाया जो इस्त्राएल की सन्तान को लिये किये गये थे (लौव्यवस्था २६:४०-४५) उसने अपने ही पापों के अंगीकार किया।

इन दिनों में बहुत से विश्वासियों की दशा बिल्कुल ऐसी ही है, जैसा नहेम्याह के दिनो मे इस्त्राएल की सन्तान की थी। उनके बीच में दु:ख का खालीपन (बांझपन) है इसलिये कि उन्होने परमेश्वर को सही स्थान नहीं दिया, ना उसके वचन को ना अपने जीवनों में उसके भवन को दिया (१ कुरिन्थी ३:१-६) केवल उस समय जब हम अपने आप को नम्र करते और परमेश्वर की ओर मुड़ते, सच्चे पश्चताप के साथ और पूर्ण हृदय से उसे आदर देते तो क्या हम उसकी धनी आशीषें पा सकते हैं। जब हम परमेश्वर के साम्हने कांपते और अपने पापों को मान लेते, परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता और हमारे पापों को क्षमा करता और हमें आशीष देता है। २ इतिहास ७:१४ की परमेश्वर की प्रतिज्ञा कई दिनों तक करना आरम्भ किया। यही सिद्धान्त

विश्वासियों के लिये भी लागू होता है। केवल उस समय जब वे अपने आप को नम्र करते, अपने पापों को मानकर परमेश्वर से प्रार्थना करते, तो क्या वे उसके लिये अपना प्रेम पा सकते हैं। तब परमेश्वर भी उनमें अपना प्रार्थना का आत्मा और बोझ की प्रार्थना का आत्मा उंडेल कर कार्य आरम्भ करने लगता है (नहेम्याह १:५-८) इस प्रकार हम देखते हैं कि केवल अपने आप को नम्र बनाकर और अपनी गलतियों को मानकर और परमेश्वर के साथ सही होकर हमारें जीवन पूर्णरुप से फलदायी बन जाते हैं। एक बार हम फिर परमेश्वर की आशीषों को पाते जिसका आरम्भ में हमने आनन्द किया था।

अध्याय १

अपने हाथों को समर्थ करना

अ) अगुवे की तैयारी

पहले परमेश्वर नहेमियाह के जीवन में कार्य करने लगा और उसके माध्यम से दूसरे परमेश्वर के कार्य में लगाये गये। परमेश्वर के लोगो के इतिहास में हम देखते है कि बार बार परमेश्वर ने अपने विश्वासयोग्य सेवकों को उठाया या कुछ लोगों के झुन्ड को उसके कार्य को आरम्भ करने के लिये। प्रभु ने हमेशा अपने लोगों के लिये महान कार्य किये हैं कुछ विश्वास योग्य सेवकों के कारण। परमेश्वर की इच्छा हम मे से हर एक के लिये है कि हम उस बचे कार्य के हिस्से हों जिसकी विश्वास योग्यता और बोझ की प्रार्थना के द्वारा वह अपनी योजना और अपनी दैवीय अभिप्राय के लिये कार्य करना चाहता है।

नहेम्याह को बहुत दु:ख था इसलिये कि यरुशलेम व्यर्थ पड़ा था और फाटक आग से जल गये थे (नहेम्याह २:३) उसी प्रकार से वे जो गहराई से परमेश्वर के कार्य के लिये चिन्तित है बिना उदास हुए नहीं रह सकते जब वे परमेश्वर के लोगों के जीवनों में पलते, आत्मिक दशाओं की कभी देखते हैं। आजकल संसार के बहुत से हिस्सों में हम विश्वासियों के बीच कमजोरी और आत्मिक बचपना देखते हैं। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के अनुसार उसकी महान शक्ति हमारे हाथों में है, हमारे जीवन बहुतायत से फलदायक हो सकते है, यदि हम परमेश्वर के लोगो की दु:खभरी दशा के प्रति चिन्ता रखते हों और यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार करने के इच्छुक

हों (यूहन्ना १४:१२; प्रकाशित वाक्य १:१८) हमारे पास एक उद्धारकर्ता है जो आज, कल और हमेशा एक सा है। (इब्रानी १३:८) जब हम पूर्ण रुप से परमेश्वर के वचन की आज्ञा पालन करने मे असफल होते हैं, तो हमारे जीवन खाली / सूखे हो जाते और हम असफलताओं, हार, और आत्मिक बचपन का ढेर अपने अनुभवों में बनाते हैं।

जब इस्त्राएल की सन्तान बाबुल मे थे, लगता था कोई आशा नही है उनके यरुशलेम वापस लौटने की, इसलिये कि वे बंधुवाई में थे और गिनती मे थोड़े थे। पर परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा जो अपने सेवक यिर्मयाह को दी थी – पूरा किया। इस प्रकार एक गैर यहूदी राजा जिसका नाम क्षयर्ष था, उन्हें वापस लौटने का एक अवसर दिया गया (२ इतिहास ३६:२२) जब राजा क्षयर्ष ने घोषणा की उसके बाद वे यरुशलेम वापस आने लगे। वे अन्त मे परमेश्वर की भविष्यवाणी को पूरा होते देख सकते थे – जो चीजे असम्भव थी वे सम्भव हो रही थी।

ब) भरोसा कर आज्ञापालन करना :

यद्यपि राजा क्षयर्ष ने खुली घोषणा की कि सब यहूदी जो वापस जाना चाहते हैं जा सकते है फिर भी बहुत से वहीं रहे क्योंकि उन्होने विश्वास नही किया। उसी प्रकार से यदि हम विश्वास करने मे असफल होते और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करते, तो वह हम में और हमारे द्वारा नही कर सकते। विश्वासी होकर हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर दृढ़ भरोसा रखना चाहिये और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ती के

लिये उनका दावा करना चाहिये। बहुत से ऐसे हैं जो कहते हैं कि वे बाइबल पर विश्वास करते हैं पर फिर भी जो वह कहती उसे करते नही। वे मानव द्वारा बनाये गये रीति-रिवाजों और व्यवहार पर विश्वास करते हैं। एक और वे परमेश्वर पर भरोसा करने का अंगीकार करते हैं पर दूसरी और जब उन्हें पैसों की आवश्यकता है तो वे भीख मांगना आरम्भ करते हैं। ये आश्चर्य की बात है कि कुछ लोग चंगाई की सभा करते हैं। फिर भी ये नोट करना आश्चर्य की बात है, कि जब उनके आर्थिक बात का प्रश्न उठता है तो वे इस विश्वास को लागू नहीं करते पर इस बिन्दू पर वे आर्थिक सहायता के लिये मनुष्यों की ओर देखते हैं। परमेश्वर जो चंगा कर सकता है, तो क्या वह उनकी पैसों की आवश्यकता पूरी नही कर सकता है? वे परमेश्वर के वचन का अनुसरण करने मे असफल होते हैं। केवल उसकी आज्ञापालन करने से और परमेश्वर के वचन को कार्य करते देख सकते हैं। यूहन्ना १५:७ के अनुसार हमें प्रभु यीशु की प्रभुता के अधीन उसमें बने रहना है। हर विस्तार से उसकी आज्ञापालन करने से हमें जीवन के हर कदम पर उसके द्वारा चलाये जाना और नियंत्रित किये जाना है। हमें हर बात / मामले में उसकी आज्ञा पालन करना चाहिये – तब ही हम उसकी प्रतिज्ञाओ का पूर्ण होना देख सकते हैं।

विशेष रुप से "तुम मांगोगे और तुम्हारे लिये हो जायेगा" (यूहन्ना १५:७) इस प्रकार नहेमियाह ने विश्वास किया और तब आज्ञा पालन करने लगा और परमेश्वर अपने हिस्से में उसके लिये कार्य करने लगा।

## स)	प्रार्थना का जीवन :

बहुत से लोग प्रभु मसीह यीशु में अपने विश्वास की घोषणा करते हैं पर जब परेशानी आती वे रोने लगते हैं। वे अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के विषय कई प्रकार से संकेत देते हैं। कभी कभी अपनी प्रार्थनाओं में वे जोर से प्रार्थना करते हैं। पर नहेमियाह के मामले में हम उस प्रकार का कुछ भी नही पाते। उसने राजा से कोई बिनती नहीं की यद्यपि वह सबसे करीबी सेवकों में से था और हर सम्भव अवसर था कि उसकी बिनती मान ली जाती बल्कि उसने पहले परमेश्वर से प्रार्थना की इससे पहले कि वह अपनी बिनती को धरती केराजा के पास प्रस्तुत करता। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे बुद्धि दे कि वह अपनी बिनती को सही तरह से प्रस्तुत कर सके। इस प्रकार वह जो भी शब्द राजा के सामने बोलता है उसमे परमेश्वर पर निर्भर रहा। इसके परिणाम स्वरुप जब उसने राजा के सामने बिनती रखी तो राजा देख सका कि वह परमेश्वर का जन है और शब्द जो वह बोला वो परमेश्वर के शब्द थे।

नहेमियाह ने केवल जाने की अनुमति मांगी, उसी तरह से सरकारी कर्मचारी होकर छुट्टी के लिये आवेदन देते है जब उन्हे चाहिये। (नहेमियाह २:५) उस समय वह बहुत अधिक पैसे की आवश्यकता मे था जो कार्य वह करने वाला था। वह राजा से आसानी से आर्थिक सहायतामांग सकता था और राजा भी, महान होने के कारण उसकी सहायता करने को राजी हो जाता है। पर नहेमियाह परमेश्वर के कार्य के लिये राजा के पैसों पर निर्भर नही रहना चाहता था। और हम देखते हैं कि राजा न केवल

उसे छुट्टी देने को प्रसन्न था कि वह यरुशलेम जाये (पद ६) पर उसने उसके साथ अपनी सेना के सेनापति और उसकी सुरक्षा के लिये छुड़सवार भी भेजे (पद ९)।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जब हम अपने घुटनो पर जाते है किसी भी बोझ के साथ तो न केवल हमारा सौभाग्य है कि हमारी अगुवाई और शासित उसके द्वारा हों, और हमारे सुरक्षा, सफलता के लिये हर सम्भव चीजें उपलब्ध कराये। इस प्रकार नहेमियाह यरुशलेम पहुंचा और उसके सामने जो काम था उसके लिये तैयार होकर।

अध्याय २

साथ साथ संघर्ष / सफलता पाना

अ) परिस्थितियों का सर्वेक्षण करना :

इससे पहले कि नहेमियाह ने टूटी दीवारों को बनाना आरम्भ किया, वह स्वंय देखने के लिये गया कि वो कैसे टूटी थी और फाटक किस प्रकार जल गये थे। इससे पहले कि हम परमेश्वर के भवन का पुन: निर्माण करें तो हमें पहले उसके खालीपन का कारण पता करना है।

इन दिनो बहुत स्थानों में हम विश्वासियों और मसीही अगुवों को आत्मिक जागृति और परमेश्वर के लोगों के बीच जागरुकता के लिये प्रार्थना करते पाते हैं बिना इस सूखेपन/खालीपन के कारण को जाने हुए। केवल प्रार्थना में बोलचाल की कहावत को कहते हुए जैसे "हमने पाप किया है" आदि आदि। हम परमेश्वर को उसके लोगो के बीच़ कार्य करते नही देखते हैं। वे सोचते हैं कि प्रार्थना करने से उन्होने उपलब्धि पा ली है कि और उसके विषय भूल गये है। जैसे मरीज जब डाक्टर के पास जाता और केवल ये कहने से नही कि वह ठीक नही है चंगा नही हो जाता। ये विश्वासी भी आत्मिक जागृत की उम्मीद नही कर सकते बिना प्रार्थना से ऊपर उठकर जाने से प्रार्थना करके और कुछ नहीं करते। जब तक कि मरीज अपनी परेशानी विस्तार से नही बताता, तब तक डाक्टर उसकी जांच नही कर सकता या उसकी बीमारी का पता लगा सकता है और सही इलाज दे सकता है। यरुशलेम की दीवारों

की दशा इस्राएल के सन्तानों के पाप के कारण हुई थी। इसका स्पष्ट रुप से सामना नहीं किया गया। बहुत वर्षो तक, परमेश्वर अपने प्रेम से बाहर जाकर उन्हें, अपने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा चितौनी देता है, पर उन्होने परमेश्वर की आज्ञा उलंघन करना उसकी बार बार चितौनियों के बावजूद जारी रखा। उन्हें काफी अवसर के बाद परमेश्वर ने बाबुल में नबूकदनेजर राजा को भेजा और उनके शहर को नष्ट किया, शहरपनाह की दीवारों को तोड़ दिया और फाटकों को जला दिया।

आज के दिनो में भी हम ऐसी परिस्थिति पाते हैं, विश्वासियों के बीच खालीपन/सूखापन है क्योंकि वे मनुष्य द्वारा बनाये गये रीतिरिवाजों, नियमों का पालन करना पसन्द करते हैं ना कि परमेश्वर के वचन की आज्ञा पालन करते। वे इन परेशानियों की जड़ को पहचानने में असफल हैं।

जब एक व्यक्ति मज़बूत इमारत का निर्माण करना चाहता है सबसे पहले उसे एक मज़बूत बुनियाद डालनी है। आत्मिक रुप से हम ये देखते हैं कि हमारे प्रभु ने भी कहा “कि यदि हम अपना घर चट्टान पर बनाना चाहें, तो निर्माण करने की प्रक्रिया उसकी शिक्षा के अनुसार होना चाहिये, उसके निर्देशों के अनुसार उसकी स्वर्गीय इच्छानुसार वा स्वर्गीय योजनानुसार उसकी स्वर्गीय बुद्धि और स्वर्गीय सामर्थ के द्वारा हम इफीसियों २:२० मे पढ़ते हैं “और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाये गये हो”।

बहुत से लोग इस प्रथम नियम को भूल जाते हैं और परमेश्वर के भवन को रेत पर बनाने का प्रयास करते हैं, उन चीजों पर जिनमें परमेश्वर का सहारा नही है।

इसीलिये हम हर चीज को टुकड़ों में गिरते हुए देखते हैं, परमेश्वर हमे इब्रानी १२:२६ में एक मूलभूत चितौनी देते हैं, वह उन सब चीजों को जो मानव द्वारा बनाई गई सब को हिलाने पर है, मानव निर्मित वर्ग/सम्प्रदाय आदि आदि। इस प्रकार जो कुछ भी हम करते है इन्हें परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिये, यदि हम चाहते कि हमारे कार्यों में फल लगें और सामना करने वाली ताकत की जांच मे दृढ़ खड़ी रह सके।

ब) परिस्थितियों का साम्हना करना :

जब नहेमियाह ने शहर की दशा को बहुत दु:खद हाल में पाया तो उसने दूसरो को भी सूचित किया (पद १७) जब कार्य आरम्भ हुआ बहुत लोग सहायता के लिये आये। उसने उन्हे भी बताया कि परमेश्वर का हाथ उस पर है (पद १८) यहां तक कि इन दिनो में हमें नहेमियाह जैसे व्यक्ति की आवश्यकता है जिसके विषय लोग कह सके "सत्य में परमेश्वर का हाथ इस व्यक्ति पर है" जब लोगों ने देखा कि परमेश्वर का हाथ नहेमियाह पर था तो वे भी परमेश्वर के कार्य मे शामिल हो गये। पर जब सनबलत, तोबियाह और गेशेम अरबी ने सुना तो वे उन पर हंसे और उनकी निन्दा की। इस प्रकार हम पाते हैं कि जब हम परमेश्वर के किसी कार्य में हाथ बटाते हैं तो अवश्य है कि परमेश्वर के शत्रुओं द्वारा हमारा विरोध किया जाये। ये प्रथम हथियार है जो शैतान हमें डराने और निरुत्साह करने के लिये इस्तेमाल करता है। नहेमियाह के समय के दौरान ये तीनी शहर के बहुत प्रभावशाली थे। हम सम्बलत जैसे व्यक्ति और

तोबियाह का सामना करते हैं हर देश में जो शक्तिशाली रुप से परमेश्वर के कार्यो का विरोध करते हैं। ऐसे लोग बड़ी सफलता से हमे परमेश्वर के पीछे चलने से रोकते है यदि हम पूरी तौर से परमेश्वर की सामर्थ के लिये प्रार्थना ना करें। यदि हम उसके लिये कोई कार्य करते हैं तो वे हमें निरुत्साह करने के लिये हमारा मज़ाक उड़ाते हैं। नहेमियाह ने प्रार्थना के द्वारा इन सब रुकावटों पर विजय पाई। उसने उनके चीजों पर ध्यान नहीं दिया पर अपना दिमाग परमेश्वर पर लगाया। इसीलिये वह कह सका बड़े भरोसे के साथ, "स्वर्ग का परमेश्वर हमें सफलता देगा इसलिये हम जो उसके सेवक हैं उठकर बनायेंगे" (पद २०) वे जिनका नया जन्म नही हुआ है और सांसारिक दिमाग के हैं बहुत चतुर दिखते हैं पर परमेश्वर के कार्य में कोई हिस्सा नही है इसलिये कि उन्हें बुलाया नही गया है।

बहुत से लोग परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते है पर जब कठिनाइयां आती हैं तो वे परमेश्वर पर भरोसा करने की अपेक्षा धनी लोगों पर भरोसा करना पसन्द करते हैं, उन्हें किसी भी हालत में संसारिक, अधर्मी लोगों पर भरोसा नही करना चाहिये। प्रार्थना की सहायता से और पूर्णरुप से परमेश्वर की आज्ञापालन करने से हम शत्रु को अवश्य परास्त कर सकते हैं जो हमें रुकावट डालने और डराने का प्रयास करते हैं जब हम परमेश्वर के कार्य के लिये साहस से खड़े होते हैं। इस प्रकार परमेश्वर पर निर्भर प्रार्थना में नहेम्याह ने न केवल शत्रुओ के विरोध में खड़ा हुआ पर उसे परास्त भी किया।

हमने परमेश्वर के वचन से देखा है कि किस प्रकार हमीर आत्मिक खालीपन पर विजय केवल परमेश्वर के वचन पर आज्ञाकारी होने से पा सकते हैं। यरुशलेम की टूटी दीवारें और जले हुए फाटक आज इस वर्तमान के परमेश्वर के लोगों की संसार में बिगड़ी दुदर्शा की ओर संकेत करते हैं। परमेश्वर ने इस्त्राएल की सन्तान को चितौनिया देने के लिये बहुत से भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। पर उन्होने ध्यान नही दिया या पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा नही मानी पर लगातार इससे विद्रोह करते रहे जब तक कि उसने उन्हे सज़ा नही दी। इससे पहले उसने चितौनियां दी उसने बाबुल के राजा नबूकदनेज़र को उन्हें यरुशलेम को बन्दी बनाने के लिये भेजा कि सब लोगों को बंधुवाई में ले जाये। यरुशलेम की शहरपनाह टूटी हुई थी और फाटक जले हुए थे। परमेश्वर ने उन्हें अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बताया कि सत्तर वर्ष के बादवह उन्हें यरुशलेम वापस ले आयेगा और यही उसने किया। तब उन्होने पुन: दीवारों को बनाया और जले फाटकों को बनाया और इस प्रकार परमेश्वर के साथ सहकर्मी बन गये। उसी प्रकार से हम जो विश्वासी हैं प्रभु यीशु के साथ सहकर्मी बन जाते हैं जितने शीघ्र परमेश्वर अपने साथ मेलमिलाप प्रभु यीशु के द्वारा हमारा करता है जैसा उसने इस्त्राएल की सन्तान के साथ सत्तर वर्ष की बंधुवाई के बाद किया।

बहुत से नामों में हमें एक विश्वासी की तरह दिया गया है एक “उसके साथ सहकर्मी है” (१ कुरिन्थी ३:९) वैसा ही २ कुरिन्थी ६:१ में पाया जाता है” और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ व्यर्थ ना रहने दो। यदि परमेश्वर की इच्छा नही है तो वहां यरुशलेम की दीवारों को

पुन: बनाने के लिये दूसरे लोगों को इस्तेमाल करता या वह उसी राजा क्षयर्ष को इस्तेमाल करता और सेना को सामग्री के साथ भेज़ सकता था कि थोड़े समय में उसके लोगो द्वारा पुन: बनाई जा सकती थी। पर उसने वह नही किया क्योंकि वह उस सौभाग्य को बचाकर परमेश्वर के लोगों के लिये रखना चाहता था। केवल वे जो सच में नया जन्म पाये हुए हैं और जिन्होंने अनन्त जीवन का वरदान पाया हैं उन्हें परमेश्वर के भवन को बनाने में हिस्सेदार बनने का सौभाग्य प्राप्त है।

फिर भी हमें संप्रदाय बनाने के लिये नही बचाया गया या झुन्ड बनाने के लिये। हमें उसके नाम से बुलाया गया कि परमेश्वर के निवास स्थान का निर्माण करें, स्वर्गीय घर। इफीसियों २:२२ के अनुसार हम विश्वासियों को एक साथ लाया गया कि परमेश्वर के अनन्त निवास स्थान बने, परमेश्वर का मन्दिर। ये मन्दिर ईंटो से नहीं बना हैं, ना पत्थर, मिट्टी या लकडी से। ये अनन्तकाल का आत्मिक निवास स्थान है और इसे बनाने का सौभाग्य वा सम्मान ये संसारी लोगों से मीलों दूर है। ये सौभाग्य स्वर्गदूतों को भी नही दिया गया पर विशेष रुप से उन को दिया गया जो प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू से खरीदे गये हैं।

स) परिस्थितियों पर विजय पाना:

१) प्रभु में सामर्थ लेना :

नहेमियाह के यरुशलेम आने के बाद और जब उसने शहरपनाह की दीवारों की टूटी – फूटी दशा वा फाटकों को जले हुए देखा – वह गया और दूसरे लोगो को

बताया और पुन: निर्माण के लिये तैयार हुआ। नहेमियाह जानता था कि ये परमेश्वर था जिसने उसे वहां भेजा और कि वह उसके कार्य के लिये रास्ता खोलेगा। यहां उसके पास विश्वास था कि परमेश्वर उसकी सहायता अवश्य करेगा। वह बिना हिचकिचाहट के आगे बढ़ा और कार्य को लोगो के बीच इस प्रकार बांट दिया कि सब इस कठिन काम में हिस्सा ले सकें।

यरुशलेम की दीवारें बहुत, ऊंची थी जिन में कार्य करने के लिये अच्छे प्रशिक्षित और अनुभवी लोगों की आवश्यकता थी। दीवारें इतनी बुरी दशा में थीं कि उन्हें पुन: बनाना बहुत कठिन था। इसी तरह से जब हम आज लोगों के ये खालीपन/सूखेपन को देखते हैं और ये विचार करने लगते हैं कि लोगों की बेहतर दशा किस प्रकार बनायें। ये सब मिलकर असम्भव सी प्रतीत हो। बहुत से लोग निराश के रुप में कहें “हमें लोगों की दशा की चिन्ता नहीं करनी क्यों हम प्रेरितों के समय में नही रह रहे हैं” दूसरे सोचते हैं कि उन्हें जाकर समय के अनुसार कार्य करना चाहिये। पर परमेश्वर लोगों की इस दशा से प्रसन्न नहीं है। यदि आप उसकी आज्ञापालन करने और उसके पीछे चलने के इच्छुक हैं तो वह आपको अतिरिक्त सामर्थ और अनुग्रह देगा। हमें ये नहीं भूलना चाहिये कि हमारी सभी मानव की सीमाओं के साथ वा अपंगता के साथ परमेश्वर हमें अद्भुत रीति से इस्तेमाल कर सकता है यदि हम उस पर भरोसा करने वा उसकी आज्ञा पालन करने की इच्छा रखते हैं।

२) कार्य करने की इच्छा रखना :

नहेमियाह ने दैवीय आज्ञा के अनुसार दीवार को विभिन्न हिस्सों में विभाजित कर दिया था। किसी ने शिकायत नही की या इन्कार किया कि उसे विशेष कोना या दीवार का हिस्सा दिया जाये उनकी पसन्द के अनुसार। कुछ लोग कामों का चुनाव अपने काल्पनिक विचार या रुचि के अनुसार करते हैं और कहते हैं कि वे केवल ये विशेष कार्य कर सकते हैं दूसरे काम नहीं। उदाहरण के लिये पवित्र महासभा के दौरान कुछ लोग कहते हैं कि वे केवल बर्तन धो सकते हैं और दूसरा काम नहीं कर सकते। हम परमेश्वर के सेवकों के बीच पाते हैं बहुत से लोग परमेश्वर की सेवा अपनी ही पसन्द से करना चाहते हैं और इस प्रकार परमेश्वर की योजना और आदेश मे सही नहीं बैठते। उदाहरण के लिये यदि उनके पास कई बच्चें हैं तो वे ऐसे स्थान में होना चाहते हैं जहां अच्छे स्कूल हों, रहने के लिये अच्छे घर हों आदि आदि। जहां कही परमेश्वर उन्हें भेजता वे प्रसन्न नहीं है। वे वहां रहना चाहते जहां पत्नियां चाहती हैं। कुछ पत्नियां अपने पतियों के दिमाग को आसानी से घुमा सकती है। किसी ने पत्नि को स्वर्ण दिलाया कि पति घर का सिर है। इसपर उसने उत्तर दिया कि उसने माना कि पति सिर है पर वह गर्दन है जो सिर को घुमाता है। ये परमेश्वर के वचन के अनुसार नही है। इसीलिये हम पढ़ते हैं कि नहेमियाह ने परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार पूरे कार्य को विभाजित कर दिया – लोगों के मध्य में चाहे वे गरीब या धनी हों, जवान या वृद्ध। उसने किसी और बात पर ध्यान नही दिया केवल परमेश्वर की अगुवाई पर। हम जानते हैं कि परमेश्वर के आदेश, योजना हमेशा उत्तम होती है।

यदि कोई कठिनाई है तो वह स्वंय हमें सामर्थ देगा कि उस पर विजय पायें। यदि कोई रुकावट है तो वह स्वंय उसे दूर करेगा और यदि कोई असम्भवाना है तो वह स्वंय उसे सम्भव बनाता है। यदि कोई आवश्यकताएं हैं तो वह स्वंय उनकी पूर्ती करेगा। सब लोग पूरे ह्दय से व्यस्त हो गये और जो हिस्सा दीवार बनाने को उन्हे दिया गया उसे बनाने लगे। वे आनन्द और विश्वास योग्यता से कार्य करते रहे। उनमें से किसी ने भी नही बुड़बुड़ाया या कहा, “मैं इस कार्य को नही कर सकता हूं”। उदाहरण के लिये हम नहेमियाह ३:३ में देखते हैं जो भी काम उन्होने किया पूरी तरह से उसे किया।

ये विश्वासी के जीवन का महान रहस्य है। जो कुछ भी हम करे उसके लिये पूरे ह्दय से करें (कुलुस्सियों ३:२३) प्रभु यीशु के विश्वासी होकर हमे जो भी काम दिया गया है घर पर या बाहर हमें उसे पूरे ह्दय से करने में असफल नही होना चाहिये।

एक विशेष अस्पताल में एक विश्वासी नर्स थी और वह अपने कार्य के प्रति बहुत सर्तक थी। कुछ समय बाद उसे नये वार्ड मे डयूटी पर लगाया गया और यहां भी वह पूरे ह्दय से अपना कार्य करने लगी और वार्ड में सब चीजे सही और स्वच्छ रखी। इसे देखकर एक मरीज ने प्रश्न पूछा कि आपके काम को देखने कौन आ रहा है उसने उत्तर दिया “कोई नहीं” मरीज ने पूछना जारी रखा तो फिर आप इतनी कड़ी मेहनत क्यों करती हो? उसने कहा कि उसके पहले जो भी नर्स ने काम किया वे अपनी डयूटी के प्रति विश्वास योग्य नही थीं। इस पर उस नर्स ने उत्तर दिया कि वह किसी मनुष्य को प्रसन्न करने के लिये नही करती पर केवल प्रभु यीशु को प्रसन्न

करने जो उसका उद्धारकर्ता था। हमें सीखना चाहिये कि किसी भी काम को इच्छानूसार स्वीकार करता, जो प्रभु उसे देता है। जब मैने १ ९ ३ २ में अपने आप को परमेश्वर की सेवा के लिये दे दिया। मैने प्रभु यीशु से वायदा किया कि मैं काम के प्रति, भोजन, मौसम या किसी और चीज़ के लिये कोई चुनाव नही करुंगा और मैं तैयार था कि जहां कही वह भेजना चाहे भेजे। मैने विश्वास किया वह मुझे अकेला नहीं छोड़ेगा और मेरे लिये ये काफी था। वह हमसे पहले जाता है, हमारे पीछे, हमारे साथ और किसी भी प्रकार के कार्य के लिये सामर्थ देता है जो पूरा करने को हम लें, जब तक ये उसकी सिद्ध इच्छा और योजनानुसार है।

यरुशलेम की दीवारों के पुन:निर्माण में उन लोगों के बीच जो नहेमियाह की सहायता के लिये आये उनमें से कुछ दक्ष बढ़ई और कारोबार नहीं थे पर उन्होने कार्य को इसलिये स्वीकार किया कि ये परमेश्वर का कार्य है। इसके परिणाम स्वरुप परमेश्वर ने उन्हें ज्ञान और कुशलता दी जो इस कार्य के लिये आवश्यक थी। दूसरी ओर कुछ ऐसे थे जिन्होने पूरे दिल से कार्य नही किया। हम नहेमियाह ३:५ से देख सकते हैं यद्यपि प्रतिष्ठित लोगों ने कार्य के लिये वास्तव में इन्कार नहीं किया फिर भी उन लोगों ने हृदय से कार्य नही किया।

हमारी पवित्र महासभा के दौरान जब हम स्वंयसेवको से विशेष कार्य करने को कहते हैं कुछ आगे आकर कुछ दिन कार्य बड़े हृदय से करते हैं पर जैसे दिन गुजरते जाते उनकी रुचि कम होती जाती और वे भूल जाते कि हमे जो भी कार्य दिया गया है परमेश्वर के भवन में उसे पूरी तौर से करना है।

३) कार्य बांटने मे आनन्द :

नहेमियाह की पुस्तक के तीसरे अध्याय में हम पाते हैं कि हर एक को कुछ महत्वपूर्ण कार्य करने को दिये गये हैं। भले ही उनका स्थान या पद जो भी हो चाहे वे याजक हों, प्रतिष्ठित हों, व्यापारी हों या सुनार हों (पद ८, ३१, ३२) यद्यपि शल्लूम हेलोहेश का पुत्र आधें यरुशलेम का शासक था (पद १२) फिर भी वह और उसकी पुत्री इस कार्य में हिस्सा बटाने के लिये साम्हने आये। महायाजक ऐलियाशाब और उसके भाइयों ने इस प्रभु के कार्य में बढ़कर अगुवाई का हिस्सा लिया (पद १)

इन दिनो में हम परमेश्वर के सेवकों के बीच ये पाते हैं कि वे कोई भी कठिन और मेहनत के कार्य को लेना नहीं चाहते, वे विशेष ध्यान चाहते कि उन्हें सम्मान दिखाया जाये मानो वे दूसरो से भिन्न और ऊपर हैं। हम सभी को परमेश्वर के कार्यों में हिस्सा लेना चाहिये भले ही हम कोई क्यों न हों या जिस भी पृष्ठभूमि से आये हों। पाठ जो हमें सीखना है वह ये कि कार्य करने की इच्छा उसके आदेश और उसकी योजना हमारा उद्देश्य होना चाहिये। परमेश्वर के भवन में हम अपना चुनाव नही रख सकते पर हमे उसी की इच्छा करनी है। यदि लोगों ने नहेम्याह की आज्ञा का पालन नही किया होता तो यरुशलेम की दीवारें नहीं बन पाती।उनकी उसकी अगुवाई की आज्ञाकारिता में, शत्रु के विरोध के बावजूद वे आगे बढ़े और कार्य करते रहे जब तक कि कार्य पूरा नही हो गया। ये नहेम्याह के लिये सम्भव इसलिये हो सका कि लोगों ने उसे अपनी विशेष सुविधाओं के लिये परेशान नही किया।

प्रभु यीशु हमारा स्वर्गीय नहेम्याह है। उसके पास नये यरुशलेम बनाने के लिये सिद्ध योजना है। यदि हम परमेश्वर को आदेश का अनुसरण करें और उसकी योजना को उसके घर में करें और अपने प्रभुयीशु के अधीन बने रहें और हर चीज़ उसके लिये करें, तब हमारा अकेले सम्मान होगा कि हम बहते जीवन को अपने मे से संसार के विभिन्न स्थानो में बहते हुए देख सकेंगे। जैसे हम ये बताते हुए उसके सहकर्मियों की तरह परिश्रम करेंगे। हम जो कर रहे हैं प्रभु उसका रिकार्ड रखता है कि हम कैसे कर रहे हैं। आओ हम परमेश्वर के कार्यों को करने में पूर्ण हृदय से कार्य करने के रहस्य को सीख ले। तब हमें नोटिस करने में आश्चर्य होगा कि किस प्रकार प्रभु हमें अतिरिक्त सामर्थ, अनुग्रह और बुद्धि देता है कि कोई भी कार्य हम करें। हम आत्मिक एकता और प्रेम का आपस में आनन्द ले सकेंगे (यूहन्ना १३:३५)

४) शत्रुओं को दूर रखने के लिये प्रार्थना करना :

हमने पहले ही देखा है कि किस प्रकार यरुशलेम की टूटी दीवारें और जले हुए फाटक संसार के बहुत से परमेश्वर के लोगों के जीवनों के विषय बोलते है। हमने ये भी देखा है कि किस प्रकार ये इस्राएल की सन्तानों पाप और विद्रोह का परिणाम हुआ है। यहां तक कि इन दिनो मे हम परमेश्वर के लोगों मे अधिक सूखेपन को देखते हैं उनके पाप और परमेश्वर की आज्ञा ना मानने से। पर आग्रह के परमेश्वर ने हमेशा नये जीवन को लाने के लिये बचे हुओं का इस्तेमाल किया है जिससे कि उसके लोग पूर्णरुप से उद्धार का आनन्द ले सके। परमेश्वर ने नहेम्याह को इस्तेमाल किया उसके सहकर्मियों कि यरुशलेम की टूटी दीवारों और जले फाटको का पुन: निर्माण करें। वे

जो परमेश्वर की आज्ञापालन करना चाहते थे और उसके बचे कार्य के भागी होना चाहते थे, उन्हें हर प्रकार के विरोध, निन्दा और ठठ्ठा सहने के लिये तैयार करना था जैसे नहेमियाह और उसके सहायकों को साम्हना करना पड़ा और अधिक विरोध और सताव पर विजय पाई। सम्बलत मुख्य सताव करने वाला वा निन्दक था (४:१) उसका दूसरा साथी भी था जिसका नाम तोबियाह था (पद ३) ये व्यक्ति सम्बलत और तोबियाह उस स्थान के बहुत शक्तिशाली व्यक्ति थे। हमें परमेश्वर के सेवक होकर ऐसे विरोध शक्तिशाली लोगों का करना होगा जो मसीही अगुवे कहलाते है।

वर्ष १९४१ में हमने मद्रास शहर के बहुत समप्रदायों के अगुवों विरोध का सामना किया। सम्बलत और तोबियाह यरुशलेम के निमार्ण में अपने उच्च पद का इस्तेमाल कर सकते थे पर इसके विपरीत उन्होंने अपने पद के अवसर को परमेश्वर के कार्य में बाधा डालने के लिये उपयोग किया और उसके सेवकों के शत्रु बन गये। पौलुस फिलिप्पी २:२१ मे कहता है "सब अपनी भलाई करिबोज मे है"। मद्रास में प्रभु के कार्य के आरम्भ में उसने हमे चितौनी दी और सिखाया कि किस प्रकार इन विरोधों का सामना करना है। और इससे पहले कि हम "यहोवा – शम्माह" में आये मद्रास में हम मे से कुछ को बोझ था कि पूरी रात प्रार्थना करें।

हम पहले से जानते थे कि हमें बहुत सताव और शत्रुओं के हमलों का सामना करना होगा। उसी समय हमने जाना कि जब तक हम धीरज से प्रार्थना ना करें तो हम विरोध के सामने खड़े नही रह सकेंगे। तो हमने निश्चय किया कि हम पास के एक पहाड़ पर जायेंगे जो "पल्लावरम" कहलाता है वहां पूरी रात प्रार्थना करेंगे। हम करीब

२५ – ३० लोग थे। जब हम वहां गये हमने पहाड़ पर बहुत से पुरानी कब्रें और बहुत से बिच्छुओं को और कनखजूरों को पाया। परमेश्वर के वचन पर कुछ समय बिताने के बाद हम प्रार्थना करने लगे। ये बिच्छू और कनखजूरे चमकती पेट्रोमेक्स की रोशनी से आकर्षित हुए जो हम साथ ले गये थे। हम उन्हे पास आता देखकर मारने लगे ये असाधारण अनुभव था। क्योंकि एक तरफ तो हम प्रार्थना कर रहे थे और दूसरी और बिच्छुओ और कनखजूरों को मार रहे थे। प्रात: काल हम सूर्य को मद्रास शहर पर ऊगते देख सके। तब प्रभु ने हमसे बातें की स्पष्ट और खुली तरह कि हमें ऐसे कड़वे विरोध और लोगों के सताव का साम्हना करना पड़ेगा कि ये बहुत पीड़ामय और बिच्छुओं के जहर की तरह होगा। प्रभु ने हमे प्रोत्साहित भी किया कि हम ना डरें, भले ही ये लोग हमें हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे वे सफल नही होंगे जैसे हम बिच्छुओं और कनखजूरों पर विजयी हुए वैसे ही उन पर भी विजयी होंगे जो हमें सतायेंगे और विरोध करेंगे। जो प्रभु ने बिच्छुओ और कनखजूरों के द्वारा बातें की वह आने वाले वर्षों में इसका अनुभव हुआ। इस प्रकार हमारा धीरज से प्रार्थना में जाना हमारे लिये बहुत सहायक और प्रोत्साहित साबित हुआ।

हम अपनी बुद्धि, चतुराई, योग्यताओं, वरदानों द्वारा शत्रुओं पर विजय नही पा सकते या अपनी शक्ति, सामर्थ से। अब हम गवाह दे सकते हैं कि प्रभु ने विश्वास योग्यता से अपनी प्रतिज्ञाओं को पिछले ३१वर्षो तक रखा है। जितना अधिक लोग विरोध करने का प्रयास करते उतना ही अधिक हम अशिषित होते। सबसे प्रथम उन्होने निन्दा का हथियार इस्तेमाल किया जेसा हम पद १ मे देखते हैं। ये बड़े सामान्य

हथियार है जिन्हें शत्रु ने परमेश्वर के कार्य को रोकने में इस्तेमाल किया। शैतान अक्सर अपने अभिप्राय को पूरा करने निन्दा करने को अगुवों को इस्तेमाल करता है इसलिये कि वे परमेश्वर के कार्य रोकने में अधिक प्रभावशाली होंगे।

सम्बलत और तोबियाह यरुशलेम में न केवल उच्च पदों पर थे पर उनके पास बहुत पैसा भी था। वे अपने पद, अधिकार, जमीन, पैसों पर इतना घमन्ड करते थे कि उन्हें डर नही लगा कि जो परमेश्वर का आज्ञा पालन कर उसकी सेवा करना चाहते उनकी निन्दा करने में नही डरे। इसी प्रकार की चीज़े हमने देखी हैं कुछ पिछले वर्षों में होती हुई। वे जो स्कूल, अस्पतालों और दूसरी संस्थाओं के अधिकारी थे और जिनके पास बहुत पैसा था और अपने उच्च पदों के नशे में थे। वे उनको तुच्छ समझने और निन्दा करने लगे जो पानी के बपतिस्में द्वारा गवाही देना चाहते थे, ये कहने लगे "तुम्हें कौन दफन करेगा?" कौन तुम से शादी करेगा? कौन नौकरी देगा? कौन तुम्हे खिलायेगा? आदि आदि। शैतान ने सदियों से परमेश्वर के सेवकों के विरुद्ध जो परमेश्वर की आज्ञा पालन करता व सेवा करना चाहते थे ऐसे हथियारों को इस्तेमाल किया है। पर हम परमेश्वर का धन्यवाद करते और प्रशंसा करते अपने मज़बूत, प्रभावशाली प्रार्थना के हथियार के लिये जो शत्रुओं को परास्त करने को शक्तिशाली है। यदि हम पूर्ण रुप से परमेश्वर की आज्ञापालन करना चाहते हैं तो हमें इन प्रकार की निन्दा और सताव का सामना करने को तैयार रहना चाहिये। जब नहेम्याह और उसके साथियों पर शत्रु ने हमला किया तो वे प्रार्थना करने लगे। जितना अधिक शत्रु द्वारा उन पर हमला किया जाता उतना अधिक वे प्रार्थना करते। उसी प्रकार से हम भी

शत्रुओं के किसी भी हमले से निरुत्साह नही होते पर हम प्रार्थना करते जाते और परमेश्वर की सहायता खोजते। हमने अनुभव से पाया है कि लोग जो हमारी निन्दा पहले करते थे अब वे हमारे पास आकर आने का आग्रह करते कि उनकी सहायता करें, उनके लिये प्रार्थना करें या उनके स्थान पर सुसमाचार क्रूसेड आयोजित करे। यदि हम धीरज से इन निन्दा को सह लेते है, आने वाले समय में प्रभु हमारी सहायता करेगा और हमें उन लोगों के लिये जो हमारी निन्दा करते हैं उनके लिये आशीष का स्त्रोत बनायेगा। हमारा कर्तव्य ये है कि स्वर्गीय दर्शन के प्रति सच्चे बने रहें और प्रार्थना करते रहें। पद ६ में हम पढ़ते हैं कि उन्होंने एकता और एक साथ कार्य करने का मन बना लिया। वे अपने कार्य में तरक्की करते रहे जैसा परमेश्वर उन्हें आगे बढ़ना दिखाता रहा। कुछ मामलों में हम पाते हैं कि शत्रु परमेश्वर के कार्य में रुकावट डालने के लिये विश्वासियों के बीच झगड़े और मनमुटाव लाता है। अपने आपस में आत्मा में एकता बनाये रखने के लिये हमें अधिक प्रार्थना करना चाहिये।

जब सम्बलत और तोबियाह परमेश्वर के कार्यों को निन्दा और अपशब्दों द्वारा नही रोक सके तो वे अधिक क्रोधित हो गये और ताकत का इस्तेमाल करने लगे। तब उन्होंने नहेम्याह ओर उसके साथियों के साथ लड़ने का षडयंत्र बनाने लगे। उन्होंने सोचा इस प्रकार धमकाने और ताकत के द्वारा वे परमेश्वर के कार्य को रोक सकेंगे। पिछले बहुत वर्षों में हम ऐसे अनुभवों से गुजर चुके हैं, पर हमारे पास भी वही हथियार प्रार्थना का है जो शत्रु को हरा सकता है। (पद ९) इसीलिये हमे सारी रात प्रार्थना

करने का बोझ था और दूसरा समय सभा के साथ प्रार्थना करने का धीरज और बोझ की प्रार्थनाओं के साथ, हम शत्रु को हराने योग्य थे।

शत्रु परमेश्वर के लोगों के साथ उसके सेवकों के विरोधमें विरोध खड़ा कर सकता है। ये केवल बोझ की व धीरज की प्रार्थना के द्वारा हम निश्चयता से शत्रु के हमले पर विजय पा सकते हैं। हम लूका २२:३१, ३२ में प्रभु यीशु को पतरस के लिये प्रार्थना करने पाते हैं "और प्रभु यीशु ने कहा, शिमौन शिमौन, देख शैतान ने तुझे मांग लिया है कि वह तुझे गेहूं की नाई फटके पर मैने तेरे लिये प्रार्थना की है कि तेरा विश्वास जाता न रहे और जब तू परिवर्तित होगा तब अपने भाइयों को समर्थ करना"।

५) कूड़ा – कर्कट हटाना :

नहेम्याह ४:१० इसलिये कि दीवारे जल गई थी वहां बहुत सा मलवा बिखरा पड़ा था, मजबूत दीवार बनाने के लिये पहले वहां का कूड़ा कर्कट हटाना था। कूड़ा कर्कट मनुष्य द्वारा बनाये गये रीति रिवाज, प्रथाएं और व्यवहारों के विषय बोलते है। यदि हम चाहते कि परमेश्वर का कार्य मज़बूत हो तो हमे ऐसा कूड़ा – कर्कट हटाना पड़ेगा। (मरकुस ७:१ – ३)

बहुत से स्थानो में हमने सम्प्रदायों की कलीसिया के अध्यक्षों को परमेश्वर के वचन का तिरस्कार करते देखा है और मानव द्वारा बनाये नियम, रीति – दस्तूर, व्यवहारों पर चलते देखा है जो वे अपने पूर्वजों से प्राप्त करते परमेश्वर से नही।

एक दिन दस ऐसे लोग जो परमेश्वर का भय मानते थे मेरे पास आये और बड़ी नम्रता से कहा कि वे जो कुछ हमारी सभाओ द्वारा हो रहा उसकी प्रशंसा करते हैं पर दो बातें मेरे विरुद्ध थी। एक मैं क्यों दूसरा बपतिस्मा दे रहा हूं? और दूसरा हम क्यों रविवार को अलग सभा कर रहे जबकि उनकी अपनी रविवार को अराधना सभा होती है। मैने उन्हे बताया कि कृपाकर मुझे एक पद दिखायें या आधा पद। आयत बाइबल से दिखायें जहां बच्चों को बपतिस्मा दिया गया था और मुझे समझायें शब्द बपतिस्में का अर्थ। इसके लिये एक अगुवा पास्टर ने कहा कि किस प्रकार हमारे धर्मी पूवर्जों ने अपने बच्चों को बपतिस्मा दिया कई सदियों तक और मुझ से पूछा क्या वे गलत हो सकते हैं। मैने उन्हें बताया कि मेरे दादा भी बहुत परमेश्वर का भय मानते और अच्छे व्यक्ति थे तो मैने पूछा क्या मैं बाइबल की आज्ञा मानू या अपने दादा के शब्दों पर। उन्होने कहा वे इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये तैयार होकर नही आये है। तो मैने उनसे बिनती की कि एक दिन, स्थान, समय तय कर लें और कितने ही पास्टरों को निमंत्रित कर लें पर मैं केवल अकेला आऊंगा। पर मेरी एक शर्त है कि वे सब अपनी बाइबलें लायें कि जो कुछ उन्हें कहना है वे धर्मशास्त्र से कहें। वे सब राजी हो गये, समय, स्थान, दिन तय किया गया। पर आज तक कोई नही आया। अराधना सभा के विषय मैने उन्हें बताया कि हम सदस्य नही बनाये और हम कोई अनुदाय नही जमा करते। हम इधर उधर नही जाते कि लोगों को अपनी सभा में आने का निमंत्रण दें ना ही कोई सामग्री जैसे "मिल्क पाउडर" देकर उन्हें आकर्षित करते हैं। पर जब लोग अपने आप आते हैं कि प्रभु के भवन में उसकी अराधना करें तो हम उन्हें रोक नही सकते। मैने आगे उन्हें बताया कि परमेश्वर ने जैसा हमें बाइबल में दिखाया उसकी

उपासना करना हमारा अधिकार है, जिससे ये स्पष्ट है कि उसने हमारे पापों को क्षमा किया है और हमें अपने बहूमूल्य लहू से धोया है। मैने उनसे पूछा कि मुझे बतायें क्या मैने सभा में बाइबल के विरोध में बोला।

साधारणत: हमारी अराधना सभा लम्बे समय तक चलती है। एक रविवार एक बड़ा पास्टर हमारी अराधना सभा में दोपहर १ बजे आया। इसलिये कि हमारी अराधना लम्बे समय तक चल रही थी वह कुछ समय बाहर गया – वापस आकर मीटिंग में बैठ गया। बाद में उसने मुझे बताया कि किस प्रकार वह कई प्रश्न लेकर आया और किस प्रकार परमेश्वर ने सब प्रश्नो का उत्तर दिया – एक के बाद एक उस सभा के दौरान। उसने हमें अपने स्थान पर सुसमाचार प्रचार के लिये आमंत्रित किया और हर प्रबन्ध करने का वायदा किया।

परमेश्वर अपने लोगों में से कुछ को पास्टर बनने, कुछ को सुसमाचार प्रचारक, कुछ को प्रचारक बनने के लिये बुलाता है। जब वह उन्हें बुलाता है वह उन्हें नियुक्त करता है और उन्हें तैयार करता है। हमने कुछ सभाओं में देखा है कि वे जो सभाओं मे पद पाने के इच्छुक हैं उन्होने कलीसिया में कितना गन्दे विभाजन के रुप में, पार्टी और झगड़ो के रुप में ले आई है। जब तक ये कूड़ा निकाला नही गया जब तक परमेश्वर का कार्य स्थापित नही हो सकता परमेश्वर के वचन के अनुसार और स्वर्गीय योजना की पूर्ती के लिये।

नहेमियाह ४:१९ ... "काम तो बड़ा और फैला हुआ है हम लोग शहरपनाह पर अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते है"। जब परमेश्वर का कार्य बढ़ता है तो हम

संगति के लिये साथ नही आ सकते जैसा अक्सर हम चाहते हैं। ये सभा में कमजोरी लाती है। ये कमजोरी एक दूसरे में भिन्नता लाने के कूड़ा को अवसर देती है। इस कठिनाई को हटाने के लिये हमें अतिरिक्त प्रयास करना चाहिये कि संगति के लिये एक साथ आयें। पवित्र महासभा का जमा होना और विशेष मीटिंग का आयोजन समय समय पर किया जाता है जो हमें संगति में लाने में सहायक होता है और इस प्रकार अलगाव के समय की कठिनाई पर लहर लाता है।

अध्याय ३

परमेश्वर कार्य में सफलता देगा

अ) गरीब फिर भी सम्पन्न :

हमने पहले ही देखा है कि जब इस्राएल की सन्तान ने दीवार का और यरुशलेम के जले हुए फाटकों का पुन: निमार्ण आरम्भ किया, तो उन्हें अपने शत्रुओं से बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। अब हम यहां पाते हैं कि उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ा जो परमेश्वर के कार्य में रुकावट डाल रहा था और उसकी पूरी आज्ञाकारिता में। इसलिये कि आपस के प्रेम में कमी थी, उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा था। उस समय उस देश में अकाल था। इसके कारण गरीबी थी, उन्हें अपनी दाख की बारियों, जमीन, घरों को बंधक के रुप में रखना पड़ा। (५:३, ४) वहां कुछ यहूदी थे वे उनसे ब्याज लेने लगे। विश्वासी होकर ये हमारा कर्तव्य है कि जो जरुरतमन्द हैं उनकी सहायता करें। यदि हम ऐसा करने में असफल हैं तो परमेश्वर के कार्य में रुकावट है। परमेश्वर की सन्तान होकर हम पैसे और भोजन की भीख नही मांग सकते (भजन ३४:१०, ३७:२५) विश्वासी जो परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर सकते और सहायता के लिये भीख मांगने के आदि हैं वे अपने जीवनभर भिखारी बने रहते हैं। वे जिन्हें आवश्यकता है उन्हें सीखना चाहिये कि उनकी आवश्यकताओं के लिये कैसे प्रार्थना करना चाहिये। वे जिनके पास अधिक है उनकी आवश्यकता की अपेक्षा, तो प्रार्थना करने का कर्तव्य और पता लगाना कि वे

जिन्हे आवश्यकता है। यदि ये परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार किया जाता है तो बहुत सी आवश्यकताएं पूरी की जा सकती हैं और कोई हानि नहीं होगी।

कुछ साल पहले, मैं एक गरीब परिवार के साथ रुका, जो अच्छे विश्वासी थे। उस समय उस घर व्यक्ति की नौकरी छूट गई थी – एक दिन घर में कोई भोजन नहीं था, एक रोटी का टुकड़ा भी नही था। वे बच्चों सहित बिना कुड़कुड़ाये प्रार्थना करने लगे। उन्होने विश्वास किया कि परमेश्वर उनकी जरुरतों को पूरा करेगा और इसलिये उन्हें भीख मांगने की आवश्यकता नही है। जब हम प्रार्थना कर ही रहे थे हमने एक बड़ी आवाज़ दरवाजे पर सुनी। हमने सोचा किसी ने बड़ा पत्थर दरवाजे पर मारा है। पर जब दरवाजा खोला गया उन्होने एक बड़ा गनी बैग देखा जिस्मे ब्रेड, सब्जियां और पूरे परिवार के लिये काफी भोजन सामग्री थी। हम यदि विश्वासी होकर भीख मांगना आरम्भ करें तो परमेश्वर प्रसन्न नहीं होगा और हम भिखारी बने रहेंगे।

पहला पाठ जो प्रभु ने मुझे सिखाया मेरे मसीही जीवन के आरम्भ में वे ये था कि मैं किसी को भी अपनी आवश्यकता नही बताऊँगा न शब्दों में न संकेतों में पर केवल प्रभु को। एक समय था कि मेरे पास कई दिनो तक कोई भोजन नहीं था और मेरी कठिनाइयों मे ये जुड़ गया कि मुझे दुर लम्बे चलना पड़ता था।

एक दिन मैं बहुत भूखा था तब मैने अपने आप में सोचा “मैं बहुत भूखा हूं मैं भीख मांग नही सकता या किसी से भोजन नही मांग सकता। यदि मैं अपने मित्र के घर भोजन के समय जाऊं तो वह अवश्य ही अपने साथ भोजन करने को कहेगा – तब कहूंगा “नही धन्यवाद” यदि वह फिर कहेगा तो मै फिर “नही धन्यवाद” कहूंगा। पर

यदि वह तीसरी बार भोजन के लिये कहेगा तो मैं भोजन के लिये राजी हो जाऊगा"। इन विचारों के साथ मैं उसके घर गया और ठीक वैसा ही हुआ जो मैने सोचा था और मैं उस घर में भोजन कर सका। कुछ सप्ताह बाद यही परीक्षा फिर आई। मैं बहुत भूखा था तो मैने अपने मित्र के घर जाने की सोचा कि अपना पुराना अनुभव दुहराऊंगा।

जैसे मैं १:३० पी.एम. पर अपने रास्ते पर था प्रभु ने मुझे ये कहते हुए डांटा "तेरा विश्वास कहां है"? मैने उत्तर दिया "मेरी मांगने की इच्छा नही थी या भोजन के लिये भीख मांगना। केवल यदि वह आग्रह करता मैं दो बार उसे इन्कार करता तब मैं ले लेता" इस पर प्रभु ने मुझ से प्रश्न किया "तेरे मित्र के घर जाने का उद्देश्य क्या था"। मैं शर्मिंन्दा हो गया। मैने एक दम प्रभु से क्षमा करने को कहा। मैंने उससे वायदा किया कि मैं अपनी किसी आवश्यकता के लिये किसी व्यक्ति के पास नही जाऊंगा क्योंकि वह मेरा जीवित भरपूरी है (भजन २३:१) इस प्रकार प्रभु ने मुझे मज़बूत विश्वास दिया।

एक दूसरा अवसर था जब मुझे पूर दिन बिना भोजन के रहना था। आधीरात को एक व्यक्ति आया और मेरे दरवाजे पर खटखटाया और मुझे जगाया। तब उसने मुझ से कहा, "भाई, कृपाकर मुझे क्षमा करें कि रात इतनी देर से आया हूं। मैं सोया हुआ था और मैने एक स्वप्न देखा। अपने स्वप्न मे मैने देखा किसी को ये कहते हुए कि आपको भोजन के लिये बुलाऊं। तो मैं जाग उठा मैं किचिन में गया और एक प्लेट पका हुआ चावल बचा हुआ था, कृपा कर मुझे बतायें क्या आज आपने भोजन

किया? मै झूठ से उसे उत्तर नहीं दे सका तो मैने उसे बताया कि उस दिन मैने कुछ नही खाया। उसने मुझे एकदम अपने घर ले गया उस आधी रात को और मुझे भोजन दिया। ये चीज़ें अपने आप नही होतीं। ऐसा न कहें "आपका मामला भिन्न है" यदि हम परमेश्वर पर पूर्ण भरोसा रखते तो उसकी विश्वास योग्यता को साबित कर सकते हैं।

एक बार और हम २५ लोग एक सुसमाचार प्रचार को गये। उस समय हम अपना ही खाना अपने आप पकाते थे। जब रविवार आया हम में से जो खाना बनाने के जिम्मेवार थे वे पीछे रुकना चाहते थे कि हम सब के लिये खाना बनाएं। मैने उनको बताया कि प्रभु चाहता है कि हम सब अराधना सभा में जायें। उन्होने कहा, "हम अपने दोपहर के लिसे क्या करें?" मैने उन्हें बताया "प्रभु प्रबन्ध करेगा" तो हम सब गये। सभा के बाद हम सब बस स्टोप पर खड़े थे। मैने एक आदमी को देखा जिसे मैं जानता था मेरी ओर एक बड़ी टोकरी लेकर आ रहा था। मैने उससे पूछा वह क्या कर रहा है। उसने मुझे बताया कि वह एक विवाह भोज में गया था जहां बहुत भोजन बच गया था। आयोजक ने कहा कोई भी ये बचा भोजन ले जा सकता है। उसने सोचा कि जबकि उसके पास परिवार नहीं है वह भोजन अपने मित्रों और पडोसियों के लिये ले जाये। पर जब उसने हमे देखा उसने महसूस किया कि वह हमें दे दे तो उसने भोजन से भरी टोकरी हमें दे दी। उसमें अच्छा भोजन हमारे लिये काफी था। तो परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ती करेगा जब तक हम अपना भार उस पर भरोसा करने पर करें।

एक बड़ी सुबह जब मैं प्रार्थना कर रहा था प्रभु ने मुझ से एक विधवा से भेंट करने को कहा जिसे ५/- रुपये की सख्त आवश्यकता थी। तो मैं उठा और अपनी जब टटोली पर कुछ न पाया। प्रभु मुझ से कहता रहा "जा और उसको दे" मैने अपना कोट पहना और बाइबल ली और बिना पैसे के चल दिया। बडे आश्चर्य की बात कि जब मैं जा रहा था मैने देखा सड़क पर ५/- रुपये का नोट पड़ा था। उसे उठाते हुए मैने जोर से पूछा किसी का पांच रुपया खोया क्या। तीन बार जोर से घोषणा करने के बाद किसी ने उसका दावा नही किया। मैने नोट लिया और विधवा के घर गया और उसे पैसे दे दिये। वह रोने लगी और मुझे बताया कि स्वप्न मे उसके पति ने उससे कहा चिन्ता मत करो भाई भक्त सिंह आकर आपको ५/- रुपये देगा। उसने ये भी कहा प्रभु ने ठीक उस समय भेजा जब वह मेरे बारे में सोच रही थी। से चीज़े अपने आप नही होतीं।

हमें जरुरत मन्दों की सहायता करनी चाहियें जैसे प्रभु हमारी सहायता करता और अगुवाई करता है। हमें प्रार्थना करना चाहिये और प्रभु से कहना चाहिये कि जिन्हें भोजन, वस्त्र या पैसों की आवश्यकता है उन्हे हमें दिखाये। इस प्रकार हम सहायता कर सकते, अपने सह विश्वासियो को प्रोत्साहित कर सकते, विधवाओं और अनाथों की। बहुत से विश्वासी हैं जिनके पास काफी है, जरुरत से आधी है जो जरुरत मन्दों को दे सके। पर दूसरों को देने की कोई इच्छा नहीं है। इस प्रकार की स्वार्थी केन्द्रियता उनके हृदयों को बड़बड़ाने का कारण बनाती है, घृणा और जलन पैदा करती है। प्रेरित ६:१६ में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार प्रारम्भिक कलीसिया ने समस्याओ का

समाधान सात पुरुषों को नियुक्त करके किया जो पवित्र आत्मा से भरे, ईमानदार और बुद्धि से भरपूर थे। इन दिनो में हम पाते हैं कि लोग अधिकार और शक्ति पाने के इच्छुक रहते हैं, डीकन और एल्डर बनना चाहते हैं। ऐसे लोगों में प्रेम नही है या गरीबों के प्रति आत्मिक चिन्ता। वे केवल बड़ापन चाहते हैं। केवल वे जो आत्मिक हैं या परमेश्वर के द्वारा तैयार किये गये हैं वे ही चरवाहे बन सकते हैं। प्रेरित ११ में किस प्रकार पूरे यहूदिया में आकाल था और कैसे अन्ताकिया के विश्वासियों ने उनको सहायता भेजी पौलुस और बरनबास के द्वारा।

जब पौलुस और बरनबास यरुशलेम पहुंचे उन्होने विश्वासियों को प्रार्थना करते पाया। उस समय वे भयंकर आकाल और सताव से गुज़र रहे थे। पौलुस और बरनबास उन्हें प्रार्थना करते देख आश्चर्य में थे कि वे इन हालात से परेशान न होकर प्रार्थना में लगे हैं (प्रेरित १२:५) उन्होने अपने साथ पैसा और सामग्री ले गये थे - यरुशलेम के सन्तों की आवश्यकता पूरी करने के लिये, पर उन्होने उनके द्वारा वापस कुछ पाया और वह प्रार्थना का नया बोझ था। इस प्रकार वे यरुशलेम से महान आशीषें अन्तकिया लेकर आये (प्रेरित १३: १-३) ये दूसरों की सहायता और बांटने के द्वारा है जो हमारे पास दूसरों के साथ है वह हम स्वर्गीय दर्शन पाते हैं। विश्वासी होकर हमें प्रतिदिन प्रार्थना करना सीखना है और विशेषरुप से उन्हें पता करना जो जरुरतमन्द हैं। सभी प्राचीनो और चरवाहों को सही आत्मिक रहस्य सीखना चाहिये।

नहेम्याह ५:१४-१५ में नहेम्याह कहता है कि उसने इन १२ वर्षों में किसी से भी कोई उपहार स्वीकार नहीं किया। भले ही वह राज्यपाल था उसने किसी से भी

भोजन या पैसा किसीसे नही लिया। संसारिक दृष्टीकोण से उपहार लेना बिल्कुल ठीक होता। जैसा उसके स्थान पर उसके पहले जो थे लोगों पर भोजन और दाखमधु के लिये निर्भर रहा करते थे उन्होने पैसे के लिये काम किया नाम, प्रसिद्धी के लिये जबकि नहेम्याह ने परमेश्वर के भय में कार्य किया। परमेश्वर के सेवकों के बीच में भी हम कुछ को पाते हें जो पैसो द्वारा चलाये जाते और सुखविलास की इच्छा करते हैं। उन्हें केवल उन घरों में जाने का बोझ है जहां से वे कुछ इनाम पा सकते हैं। यदि वे पाते हैं कि उनकी सभा उनकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते वे अपने सन्देशों में लोगों को बुरा भला कहते हैं कि वे जानते नही कि किस प्रकार प्रभु को सम्मान देना है अपनी चीजों के द्वारा। ऐसे परमेश्वर के सेवको ने परमेश्वर पर भरोसा करना नहीं सीखा और परिणाम स्वरुप वे आत्मिक रुप से सूखेपन में है। यदि हम परमेश्वर की सेवा विश्वास योग्यता से करें और अपनी हर आवश्यकता के लिये उस पर निर्भर होना चाहिये, बिना कुछ कुडकुड़ाये या प्रश्न करते हुए, तब ही हमारी सेवकाई अत्याधिक फलदायक होगी। परमेश्वर के बहुत से दास कहते हैं कि वे विश्वास में जी रहे हैं। पर वास्तव में वे दूसरों के विश्वास में जी रहे हैं। इसलिये परमेश्वर के सेवकों को ये चितौनी पाना चाहिये कि वे परमेश्वर की सेवा से दूर भोजन, पैसे और सुख सुविधा के लिये रहते हैं। उन्हें उसके लिये सब कुछ करना चाहिये। यदि हम उस पर निर्भर होना सीख ले तो समय के अन्दर हम पायेंगे कि वह हमारी सब आवश्यकताओं की पूर्ती करता है। परमेश्वर कभी भी हमारी अद्भुत रीति से देखभाल करने में असफल नही होता पर उसके आदेशों के तरीके हैं और हमारे विश्वास बढ़ाने के। यदि परमेश्वर के सेवक विश्वास का जीवन न जी सकते ना प्रगट कर सकते हैं

तो वे दूसरे विश्वासियों के लिये नमूना नही बन सकते। जब परमेश्वर के सेवक भिखारी बन जाते हैं तो परमेश्वर का कार्य नुकसान उठाता है। यदि वे विश्वास का जीवन नही जी सकते तो बेहतर उनके लिये है कि वे छोड़ दें क्योंकि वे अच्छाई की अपेक्षा परमेश्वर के कार्य अधिक हानि कर रहे हैं। ऐसे लोग परमेश्वर के सेवक कहलाने योग्य नहीं है। क्योंकि वे उसके नाम को बदनाम करते हैं। हमारा परमेश्वर प्रेमी और विश्वासयोग्य है। हमारी सेवकाई के और विश्वास के द्वारा हमें उस स्थान पर होना चाहिये जो उसके हृदय को आनन्द और सन्तुष्टि प्रदान करता है।

ब) परीक्षाएं फिर भी विजयी :

जब सम्बलत, तो बियाह और गेशेम ने सुना कि नहेम्याह यरुशलेम की दीवार बनाने में सफल हो गये है, तो वे नहेम्याह की कुछ हानि करना चाहते थे। जब शत्रु परमेश्वर के कार्य में रुकावट पैदा करने में असफल होते हैं और देखते हैं कि परमेश्वर का कार्य तरक्की कर रहा है, तो उसका अगला हथियार उसके सेवकों पर परेशानी डालने की होती है। हमारी पूरी प्रभु की सेवा में हमें अक्सर युद्ध का सामना करना पड़ा। हम जो उसकी सेवा में हैं हमें हर प्रकार की लड़ाई से निपटने की तैयारी करनी चाहिये जिन्हे हमें दिन प्रतिदिन सामना करना है।

नहेमियाह ६:२, ३ में सम्बलत और तोबियाह ने नहेमियाह को दीवार के कार्य को पूरा करने की जिम्मेवारी से अलग करने का प्रयास किया। उसी प्रकार से हम जो परमेश्वर की सन्तान हैं उसके कार्य में व्यस्त हैं, संसारी लोग संसार के उत्सवों में हमें

उसके कार्य से दूर रखने के उद्देश्य से आमंत्रित करते हैं। समय समय पर वे विश्वासियों को सम्मान का पद भी प्रस्तुत करते हैं जिससे वे स्वंय की महिमा में आकर्षित हों। कुछ स्थानो में हमने देखा है कि नया जन्मा व्यक्ति परमेश्वर की चीजों में अधिक रुचि लेता है, तब सम्प्रदाय की कलीसियाओं के अगुवे कुछ जिम्मेवार पद लेने के लिये आमंत्रित करते हें जैसे चैयरमेन या एक एल्डर की तरह। एक नये जन्मे व्यक्ति को कलीसिया का प्राचीन बनाना धर्मशास्त्र के विपरीत है। १ तिमोथी ३:१-१० और तीतुस १:६-९ के अनुसार किसी को भी प्राचीन न बनाया जाये जब तक उसे जांजा और परखा नहीं गया है। ये दूसरा तरीका है जिसमें शैतान नये जन्में लोगों को धोखा देता है। और उनकी प्रभु के अनुग्रह और ज्ञान की बाढ़ में रुकावट डालता है। जब एक नया जन्मा व्यक्ति परमेश्वर के वचन में जोश दिखाता है और सम्प्रदाय की कलीसिया के पास्टरों की आत्मिक बाढ़ के विषय इच्छा रखता है तो उसे आमंत्रित करके उनकी कलीसियाओं में सन्देश देने के लिये भेजता है। धीरे – धीरे दूसरे व्यक्ति भी लोकप्रिय होने की इच्छा रखते हैं इस प्रकार बहुत से अच्छे लोग धोखा खाते और भटक जाते और उच्च पद के अभिलाषी होते हैं। साधारणत: वे जो अभिलाषीं हैं ये वे हैं जो अधिक परेशानी का कारण होते हैं। लोग देख सकते हैं कि उनका अपना पारिवारिक जीवन नमूनेदार नहीं है। उनके बच्चे विद्रोही हैं। ऐसे व्यक्तियों को प्रार्थना का बोझ नहीं है। पर वे प्राचीन बनना चाहते हैं और यदि उन्हें अवसर नहीं दिया गया तो वे झूठे षड़यंत्रों से परेशानी पैदा करते हैं।

नहेम्याह ६:५-६ में हम पढ़ते हैं कि ये पुरुष सम्बलत और तोबियाह नहेम्याह को परेशान करना जारी रखते हैं। जब उनकी सब चाल प्रकियाएं नहेम्याह को गया वह करने की असफल साबित होती हैं तो वे एक खुला पत्र उसे भेजते हैं जिसमें सब प्रकार के झूठे आरोप लगाये गये हैं इन दिनो में भी हम लोगों को पाते हैं जो परमेश्वर के सेवकों और लोगों विरुद्ध गन्दे पत्र लिखते हैं। अपने दोषी विवेक के साथ वे इस झूठे प्रकरण को बढ़ाचढ़ा कर प्रस्तुत करना चाहते जिसका कोई आधार नहीं होता। पर हमारा प्रभावशाली हथियार प्रार्थना करना और मामले को अपने कमी ना विफल होने वाले प्रभु को सौंप दें।

स) प्रार्थना, शक्तिशाली हथियार

नहेम्याह ६:८,९ में शत्रुओ के झूठे और दुष्ट आरोपों के कारण परमेश्वर के सेवक के हृदय में भय आ गया पर उसने शीघ्र ही पुकारा कि उसके हाथों में सामर्थ दे। हमें भी ऐसा ही अनुभव हुए हैं पर शत्रुओं की चालों को धूमिल होते देखी हैं जब हम उसके भयंकर हमले पर प्रभु के पास प्रार्थना में आते हैं। जब लोग हमें झूठे दोष लगाते हैं तो हमे वाद-विवाद में समय बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं, अपने आप का बचाव करने की जरुरत नहीं। केवल निरन्तर दृढ़ प्रार्थनाएं शत्रु के सब प्रकार की चालाकीं, दासत्व को परास्त कर सकती है हमें सब प्रकार से हानि पहुंचान के प्रयासों में। शत्रु पूर्ण रुप से शक्तिविहीन हो जाता है जब हम उसके हमले के समय प्रार्थना के स्थान में बच जाते हैं।

पद १०-१२ में हम देखते हैं कि जब सम्बलत और तोबियाह अपने सब योजनाओं में असफल हो गये तो उन्होनें दूसरी चाल सोची। उन्होने नहेमियाह के एक सहकर्मी को शमायाह को पैसे देकर अपनी ओर कर कि वह भटका कर हानिकारक सलाह दे। पद १० में हम पढ़ते है कि शमायाह ने नहेमियाह को अपने को बचाने के लिये मन्दिर में छिपने की सलाह दी। यदि नहेमियाह ने उसकी सलाह मान ली होती और अपने को मन्दिर में छिपा लिया होता तो वह शत्रुओं को उसे हानि पहुंचाने का अवसर दे देता।

शत्रु विश्वासियों के विरुद्ध इसी प्रकार का हथियार इस्तेमाल इन दिनो में भी करता है। वह अक्सर हमारे मित्रों, करीबी रिश्तेदारों को इस्तेमाल करता है जो संसारिक विचार रखते हैं कि हमें रुंकावट डालने के लिये गलत सलाह दें कि प्रभु के काम में रुकावट हो। इसी प्रकार बहुत से विश्वासियों ने परमेश्वर पर विश्वास खो दिया है। विश्वासी होकर हमें संसारी मित्र और रिश्तेदारों की सलाह नहीं मानना चाहिये। जब परमेश्वर की स्वर्गीय इच्छा और सलाह उपलब्ध है प्रार्थना के द्वारा तो संसारी मित्रों और रिश्तेदारों की सलाह को एक दम कूड़ेदान में डाल देना चाहिये। मत्ती १२:४६-५० के अनुसार केवल वे विश्वासी जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करते वे ही प्रभु के भाई और बहन हैं। परमेश्वर के कार्य में हमें सलाह द्वारा नहीं चलना चाहिये या अपने संसारी मित्रों या रिश्तेदारों द्वारा। हमने परमेश्वर के बहुत से सेवकों को देखा है इन मामलों में असफल होते हुए, जब परमेश्वर के कार्य के लिये उन्हें पैसों की आवश्यकता है जैसे जमीन का टुकड़ा खरीदना हो या पन्डाल का

निर्माण करना हो, तो परमेश्वर पर भरोसा करने के बदले वे संसारी बुद्धि को स्तेमाल करते और संसारिक मित्रों के पास आर्थिक सहायता के लिये पहुंचते हैं। वे सोचते है कि पैसा उधार लेने में कोई गलत नहीं है जब तक कि ये वापस किया जा सकता है जबकि ये परमेश्वर के कार्य के लिये तो है। इन संसारिक तरीकों से अनज्ञान रहकर ये उनके सूखेपन का परिणाम होता है।

फिर भी नहेमियाह पहचान सका कि शमायाह ने उस गलत सलाह दी थी। कई बार लोग जो अपने को परमेश्वर के सेवक बताते हैं वे दूसरे विश्वासियों के हृदयों में व्यर्थ भय पैदा करते हैं। वे कहते हैं कि परमेश्वर उनसे बोला कि वे विशेष मामलों में सर्तक कर दें और इस प्रकार अप्रसन्नता लाते हैं और बहुतों के घरों वा हृदयों में शक पैदा करते हैं। हमें परमेश्वर के वचन से चितौनी लोनी चाहिये कि ऐसे लोगों द्वारा कभी भी धोखा न खायें। परमेश्वर का वचन हमें प्रतिदिन की अगुवाई और निर्देश के लिये दिया गया हैं।

समापन

जब दीवारें पूरी कर ली गई (पद १५,१६) तब गैर यहूदी और शत्रुओं को भी ये स्वीकार करना पड़ा कि ये परमेश्वर का कार्य था। यदि हम प्रार्थनामय और कार्य में विश्वास योग्य हैं जिसे प्रभु ने हमें सौंपा है और शत्रुओं के सभी प्रकार के हमलों में धीरज घरे हुए जारी रखतें हैं। जैसा नहेमियाह के मामलों में, प्रभु हमें टूटे जीवनो को, टूटे घरों को और टूटी कलीसियाओं के पुन: निर्माण के लिये इस्तेमाल कर सकता है।

जब ऐसा कार्य हमारे द्वारा किया जाता तो शत्रु भी अपने आप को देख सकते और ये घोषित करने से नही एक सकते कि ये परमेश्वर की महिमा के द्वारा किया गया है।